पुस्तक समीक्षा

क्रांतिदूत-भाग 1 – झाँसी_फाइल्स

एक ट्वीटकार के रूप में, एक थ्रेडकार के रूप में मनीष जी को यूं तो मैं पिछले कुछ सालों से जानता हूं, लेकिन एक लेखक के रूप में उनसे मेरा पहला परिचय 'मैं मुन्ना हूं' के माध्यम से हुआ। इस उपन्यास ने मुझे काफी प्रभावित किया था।

लेकिन क्रांतिदूत इससे कहीं आगे और बढ़कर है। स्वाधीनता संग्राम के तमाम गुमनाम क्रांतिकारियों से परिचय कराती यह पुस्तक शृंखला उन क्रांतिकारियों को एक सच्ची श्रद्धांजलि है, जो गुमनामी के अंधेरे में आजादी की लौ सिर्फ इसलिए प्रज्वलित करने में लगे थे ताकि वे अपनी जीवितावस्था में ही अपने देश को आजाद देख सकें।

ना तो उन्हें तात्कालिक बड़े राजनेताओं की तरह नाम की भूख थी, ना ही अंग्रेजी कानूनों के पालन की कोई चिंता। उन्होंने बस वही किया जो उन्हें तत्काल गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने में मदद करे। मगर दुःख की बात यह कि स्वतंत्रता के बाद इस देश ने तथाकथित राजनेताओं का तो खूब महिमामंडन किया, मगर ऐसे क्रांतिकारियों को नेपथ्य में कहीं धकेल दिया।

मैं एक सजग भारतवासी होने के नाते मनीष भैया का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने वो कहानियां हमारे सामने प्रस्तुत कीं जिससे देश को यह आभास होगा कि आजादी केवल चरखा चलाकर या अहिंसा की पगडंडी पर पैदल-मार्च करके ही नहीं मिली, बल्कि इस आजादी में इन क्रांतिकारियों की उन छोटी-छोटी गतिविधियों का भी बड़ा रोल रहा जिसने अंग्रेजों की नींद उड़ाकर रख दी थी।

प्रस्तुत शृंखला की प्रथम पुस्तक #झांसी_फाइल्स में हमें ऐसी ही कई गतिविधियों की जानकारी मिलती है जो काकोरी ट्रेन लूट के बाद के कुछ समय में झांसी केन्द्र में संचालित हुईं। तमाम उन क्रांतिकारियों के नाम भी पहली बार पढ़ने को मिले जिनका इस लड़ाई में अमूल्य योगदान था।

अगर उन्होंने उस समय छोटे-छोटे किंतु आवश्यक सहयोग न किए होते तो शायद यह आजादी हमें और प्रतीक्षा करा सकती थी। झांसी से लेकर ओरछा तक चलने वाले प्रत्येक घटनाक्रम का विस्तार से वर्णन इस पुस्तक को अपने आप में अद्भुत और उत्कृष्ट श्रेणी में ला खड़ा करता है।

क्रांतिदूत पढ़ते वक्त बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे आप कोई कैमरामैन हों और सामने घटित होने वाले प्रत्येक घटनाक्रम को अपने नेत्रपटल पर अंकित कर रहे हों। मनीष भैया की लेखनी का जादू ही है और शायद सोशल मीडिया पर लंबे समय से लिखते रहने का उनका अनुभव, कि वह इस बात को अच्छे से समझते हैं कि आज की कूल जेनरेशन को किस शैली का कंटेंट पसंद आता है।

प्रत्येक संवाद स्थानीय बोली 'बुंदेली' में पुस्तक पढ़ने का आनंद अगले स्तर पर ले जाता है। 'बुंदेली' की मिठास आपको हर पंक्ति में तरोताजा कर देती है। यह पुस्तक शृंखला आने वाले नए लेखकों के लिए एक शोध का विषय हो सकती है जिससे हिंदी के पाठकगण फिर से साहित्यपाठ की ओर लौटें।

यह पुस्तक या शायद यह पुस्तक शृंखला संगठन को चलाने के अनुभवों का भी एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होगा, यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस प्रथम भाग ने अब मुझे इस पुस्तक शृंखला के अगले भाग के लिए विचलित कर दिया है, इंतजार रहेगा।

आप इसको अमेज़न से इस लिंक द्वारा मंगा सकते हैं।

https://www.amazon.in/Krantidoot-Jhansi-Files-Manish-Shrivastva/dp/9393605149/

गूगल बुक्स पर भी यह उपलब्ध करा दी गयी है।

https://play.google.com/store/books/details/Krantidoot_Jhansi_Files?id=SLtpEAAAQBAJ&hl=en_US&gl=US

रजत वैश्य
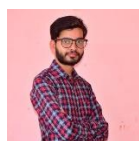
s/o Shiv Shankar Lal Vaish Nai-Basti Beniganj Hardoi Uttar Pradesh PIN -241304